MS. GITA UPADHYAY

Ms. Gita Upadhyay is a distinguished writer, translator, academician and social worker from Assam. A teacher by profession, she is known for her literary works in both Assamese and Nepali.

2. Born on 14th February, 1939, Ms. Upadhyay after completing her secondary education from Behali High School, went to Guwahatl to pursue higher education. She received her Bachelor's degree from Handique College and then went on further to pursue Masters Degree in political science from Guwahati University. Notably, she is the first woman from Gurkha Community in Assam to achieve this academic milestone. After that she was appointed as a teacher at Sibasagar College and retired as Head of the Department (Political Science) after 30 years of service.

3. Ms. Upadhyay's literary works includes two of her Sahitya Academy Award winning literary works such as Janmabhoomi Mero Swadesh, a biography of Gurkha Freedom Fighter U. Sri. Chabilal Upadhyaya and Dorbar ki Susart, a Nepali translation of Assamese play by renowned poet Jyoti Prasad Agarwala. Her earliest publication includes Nepali and Assamese translations of the Diary of a Young Girl by Ann Frank in 1972. After that, she went on to translate Nepali Poet Bhanubhakta Acharya's Ramayan in Assamese (1987). Her other translations include Muna Madan (Nepali to Assamese, 1998), Kata Suruj (Nepali to Assamese, 2008), Bhumiputra (English to Assamese, 2008), Karamveer Dhan Bahadur Nij Abhiyaktir Dapunat (Nepali to Assamese, 2008) and Abhiyatri of Nirupama Borgohain (Assamese to Nepali, 2010). Her notable original works include Ma Moi First Holu (Assamese, 1997), Amma Ma First Bhayert (Nepali, 1998), Nepal Deshar Sadhu (Assamese, 2001), Mandakini Ra Alakananda Ka Tireitir Kedar Bodrisamma (Nepali, 2002), Mahapurush Sankar Deva - Jeevan ra Karma (Nepali, 2003), Suvasit Batah (Assamese, 2004) and Kathanjali (Nepali, 2008).

4. Through her literary works Ms. Upadhyay has been able to bridge the cultural and linguistic divide between the Assamese and Nepali speaking people of Assam, thereby facilitating assimilation and harmony between the two communities.

5. Besides literature, Ms. Upadhyay has been active in the field of social work and has actively participated as member of the Board at Tezpur University as well as a Member of Juvenile Court at Tezpur District Court.

सुश्री गीता उपाध्याय

सुश्री गीता उपाध्याय असम की एक प्रतिष्ठित लेखिका, अनुवादक, शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। पेशे से शिक्षिका होने के नाते वह असमिया और नेपाली दोनों भाषाओं में अपनी साहित्यिक रचनाओं के लिए जानी जाती हैं।

2. 14 फरवरी, 1939 को जन्मी, सुश्री उपाध्याय बेहाली हाई स्कूल से अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुवाहाटी चली गईं। उन्होंने हांडिक कॉलेज से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और फिर गुवाहाटी विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि वह असम में गोरखा समुदाय की पहली महिला हैं जिन्होंने यह शैक्षणिक उपलब्धि हासिल की है। उसके बाद वह सिबसागर कॉलेज में शिक्षिका के रूप में नियुक्त हुईं और 30 साल की सेवा के बाद विभागाध्यक्ष (राजनीति विज्ञान) के रूप में सेवानिवृत्त हुईं।

3. सुश्री उपाध्याय की साहित्यिक कृतियों में गोरखा स्वतंत्रता सेनानी यू श्री छविलाल उपाध्याय की जीवनी 'जन्मभूमि मेरो स्वदेश' और प्रसिद्ध कवि ज्योति प्रसाद अग्रवाल के असमिया नाटक का नेपाली अनुवाद 'दोरबार की सुसर्त' जैसी उनकी दो साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता साहित्यिक कृतियाँ शामिल हैं। उनकी शुरुआती प्रकाशित कृतियों में वर्ष 1972 में एन फ्रैंक द्वारा लिखी गई 'डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल' का नेपाली और असमिया अनुवाद शामिल है। उसके बाद, उन्होंने नेपाली कवि भानुभक्त आचार्य की रामायण का असमिया में अनुवाद (1987) किया। उनके अन्य अनुवादों में मुना मदन (नेपाली से असमिया, 1998), कटा सुरुज (नेपाली से असमिया, 2008), भूमिपुत्र (अंग्रेजी से असमिया, 2008), करमवीर धन बहादुर निज अभियक्तिर दापुनाट (नेपाली से असमिया, 2008) और निरुपमा बोर्गोहेन की पुस्तक अभियात्री (असमिया से नेपाली, 2010) शामिल हैं। उनकी उल्लेखनीय मूल कृतियों में मा मोई फर्स्ट होलु (असमिया, 1997), अम्मा मा फर्स्ट भयर्ट (नेपाली, 1998), नेपाल देशरसाधु (असमिया, 2001), मंदाकिनी रा अलकनंदा का तिरेइतिर केदार बोद्रिसम्मा (नेपाली, 2002), महापुरुष शंकर देवा – जीवन रा कर्मा (नेपाली, 2003), सुवासित बताह (असमिया, 2004) और कथांजलि (नेपाली, 2008) शामिल हैं।

4. अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से सुश्री उपाध्याय असम के असमिया और नेपाली भाषी लोगों के बीच सांस्कृतिक और भाषाई विभाजन को पाटने में सफल रही हैं, जिससे दोनों समुदायों के बीच एकीकरण और सद्भाव सुगम हुआ है।

5. साहित्य के अलावा, सुश्री उपाध्याय सामाजिक कार्य के क्षेत्र में भी सक्रिय रही हैं और उन्होंने तेजपुर विश्वविद्यालय में बोर्ड के सदस्य के साथ–साथ तेजपुर जिला न्यायालय में किशोर न्यायालय के सदस्य के रूप में भी सक्रिय रूप से भाग लिया है।